त्रिकाल दृष्टि

हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र

आर.एन.आई. नं.- MPHIN/2015/66655

सच का दर्पण

वर्ष-1 अंक-13, भोपाल, 1 से 15 मई 2016 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2 रूपये www.trikaldrishti.com

उत्तराखंड में फिर लौटा हरीश रावत राज

देहरादून। सुप्रीम कोर्ट के सहारे एक बार फिर हरीश रावत उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बन गए. दोपहर 12 बजे सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस दीपक मिश्रा और जस्टिस शिव कीर्ति सिंह की बेंच के सामने मामले की सुनवाई शुरू हुई।

उत्तराखंड से आये अधिकारियों ने सील बंद लिफाफे बेंच को सौंपे। लिफाफे खुल पाते इससे पहले ही अटॉर्नी जनरल मुकुल रोहतगी ने केंद्र की तरफ से कहा की हमारी जानकारी के मुताबिक हरीश रावत शक्ति परीक्षण में विजयी हुए हैं और केंद्र उत्तराखंड से राष्ट्रपति शासन हटा रहा है इसलिए हरीश रावत फिर से मुख्यमंत्री बन सकते हैं. इस मामले की सुनवाई के दौरान और दिनों में काफी आक्रामक तरीके से बहस करने वाले अटॉर्नी जनरल मुकुल रोहतगी काफी काफी नरम दिखे। इसके बाद कोर्ट ने फ्लोर टेस्ट के

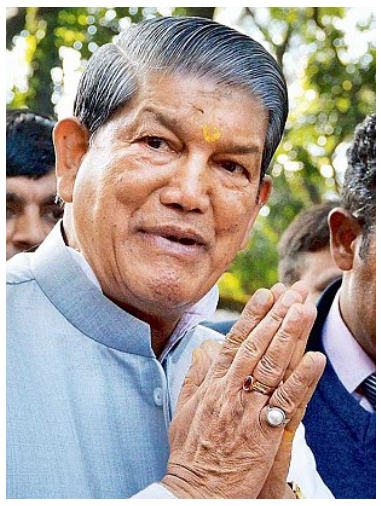

परिणाम वाले लिफाफे खोले और उत्तराखंड से राष्ट्रपति शासन हटाने के आदेश के साथ ही फ्लोर टेस्ट में हरीश रावत को आधिकारिक तौर पर विजयी घोषित किया. कोर्ट ने कहा कुल 61 वोटों में से प्रतिवादी नंबर 1 हरीश रावत के समर्थन में 33 वोट निकले और विपक्ष में 28 वोट निकले हैं. हरीश रावत मुख्यमंत्री पद सम्हाल सकते हैं. उत्तराखंड के स्पीकर गोविन्द सिंह कुंजवाल का भी वोट अलग सीलबंद लिफाफे में था जिसकी गिनती इसमें नहीं की गयी.

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया है की वो राष्ट्रपति शासन हटाने के फैसले की कॉपी शुक्रवार से पहले कोर्ट में जमा करेगी. शुक्रवार को इस मामले में अगली सुनवाई होगी. दूसरी तरफ, उत्तराखंड में राष्ट्रपति शासन लगाने के फैसले और 9 विधायकों को बर्खास्त करने के उत्तराखंड विधान सभा स्पीकर के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई करता रहेगा. इस मामले की अगली सुनवाई 12 जुलाई को होगी।

ब्रिटेन ने माल्या को निवार्सित करने से किया इंकारः अरुण जेटली

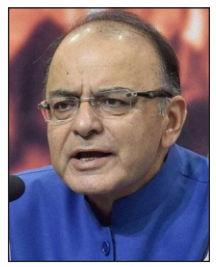

नई दिल्ली। वित्त मंत्री अरूण जेटली ने राज्यसभा में कहा कि सार्वजनिक बैंकों के हजारों करोड़ रूपये का ऋण नहीं लौटाने और धन शोधन के आरोपी एवं शराब करोबारी विजय माल्या को देश में लाने के लिए अब आरोपपत्र दाखिल करने के बाद प्रत्यर्पण प्रक्रिया शुरू करनी पड़ेगी। जेटली ने बताया कि भारत को अब आरोपपत्र दाखिल कर माल्या के प्रत्यर्पण की प्रतिक्रिया को शुरू करना पड़ेगा। माल्या के उपर सार्वजनिक बैंकों का 9400 करोड़ रूपये का ऋण बकाया है तथा उन पर धन शोधन के आरोप भी लगे हैं। सदन के नेता ने शून्यकाल में कहा कि उनके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ब्रिटेन ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति ब्रिटेन में वैध पासपोर्ट के साथ प्रवेश करता है तथा बाद में पासपोर्ट रद्द कर दिया जाता है तो निर्वासन संभव नहीं है।

मोदी ने बीजेपी सांसदों को दिया 5 सूत्री 'गुरु मंत्र'

नई दिल्ली। जनता से जुड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पार्टी सांसदों को पांच मंत्र दिए हैं। यह मंत्र भाजपा संसदीय दल की मंगलवार को हुई बैठक में दिए गए। भाजपा नेता राजीव प्रताप रूड़ी ने बताया कि प्रधानमंत्री ने सरकार के 2 साल पूरे होने के अवसर पर एक कार्यक्रम बनाया है। यह कार्यक्रम 26 मई से 26 जून तक चलेगा।

रूडी ने कहा कि मोदी केन्द्र सरकार की दूसरी वर्षगांठ पर सांसदों से फीडबैक लेंगे। लोगों के बीच सरकार की उपलब्धियों गिनाने के लिए सांसदों को सख्त हिदायत भी दी गई है। मोदी ने कहा कि सांसद अपनी सरकार की उपलब्धियों को जनता को नहीं बताएंगे, तो कौन बताएगा। रूडी ने बताया कि केंद्र की कार्यक्रम के तहत 26 जून तक देश में दो सौ स्थानों पर सरकार के मंत्री दौरा करेंगे। इस दौरान वे सरकार की उपलब्धियों को गिनाने के साथ ही विपक्ष की खामियों को भी जनता के सामने रखेंगे। पीएम ने सभी सांसदों से कहा है कि सरकार के काम-काज के अलावा 26 जून को आपातकाल दिवस के बारे में भी लोगों को बताएं। अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने, रोजगार के मौके बढ़ाने और सूखे के बावजूद किसानों की आय को बढ़ाने के उपाय करने जैसी चुनौतियों से जूझ रहे पीएम मोदी की इस कवायद को अगले साल उत्तरप्रदेश में होने वाले चुनाव और देश में वर्ष 2019 में होने वाले आम चुनाव की तैयारियों के रूप में देखा जा रहा है।

पीएम मोदी ने दिए ये 5 सूत्र

1. संसद सत्र के समापन के बाद सांसद अपने क्षेत्र में ज्यादा समय देंगे
2. सांसदों को कम से कम 7 रातें अपने क्षेत्र में गुजारनी होंगी
3. सांसद 14 दिन अपने-अपने क्षेत्र में घूमें
4. पिछले दो सालों में केंद्र सरकार की ओर से किए गए कामों को जनता तक पहुंचाएं
5. जनता से फीडबैक लें।

अमिताभ बच्चन को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं

नई दिल्ली। 15 साल पुराने आयकर मामले में बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन को झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने इनकम टैक्स विभाग को अमिताभ से जुड़े इस केस को दोबारा खोलने की इजाजत दे दी है। गौर हो कि इस केस में बॉम्बे हाइकोर्ट ने उन्हें राहत दी थी। यह मामला वर्ष 2001 के 'कौन बनेगा करोड़पति' शो से जुड़ा है। अमिताभ पर इस शो से जुड़ी कमाई पर 1.66 करोड़ रुपए का टैक्स बकाया है। उन्होंने कोर्ट से इस आय पर छूट की अपील की थी। अमिताभ को टैक्स नोटिस देने के असेसमेंट ऑफिसर के आदेश को इनकम टैक्स कमिश्नर ने बरकरार रखा था। लेकिन इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल ने इस आदेश को खारिज कर दिया था। ट्रिब्यूनल के आदेश के खिलाफ इनकम टैक्स विभाग ने बॉम्बे हाईकोर्ट में इस सिलसिले में अपील की थी लेकिन हाईकोर्ट ने अपील खारिज कर दी।

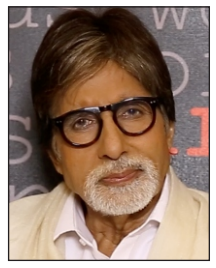

कार में हुआ धमाका, 50 मरे 60 से ज्यादा घायल

बगदाद। इराक की राजधानी बगदाद में एक व्यस्त बाजार में बुधवार को हुए कार बम विस्फोट में कम से कम 50 लोगों की मौत हो गई और 60 से ज्यादा लोग घायल हो गए। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, आंतरिक मंत्रालय के एक सूत्र ने कहा कि सद्र शहर केशिया बहुल मशहूर बाजार में एक कार में भारी विस्फोट हुआ। इस हादसे में मृतकों की संख्या बढ़ सकती है, क्योंकि घायलों में कई की हालत गंभीर है। एक पुलिस अधिकारी के मुताबिक बकोबा के शिया बहुल एक इलाके में थोडी देर पहले बम हमलावर ने विस्फोटकों से लदी एक कार विस्फोट कर उड़ा दी। बकोबा इराक के दियाला प्रांत की प्रांतीय राजधानी है और बगदाद से 35 किलोमीटर दूर है।

गिलानी के बेटे को अफगानी सैनिकों ने छुड़ाया

कराची। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री युसुफ रजा गिलानी के अपहृत बेटे अली हैदर गिलानी को अमेरिका और अफगानिस्तान की सेनाओं के एक संयुक्त अभियान में अफगानिस्तान से मंगलवार को छुड़ा लिया गया. संदिग्ध तालिबान आतंकियों ने तीन साल पहले अली हैदर का अपहरण कर लिया था. पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने बताया कि अफगानी और अमेरिकी सुरक्षा बलों ने एक संयुक्त अभियान में अली हैदर गिलानी को अफगानिस्तान के गजनी प्रांत में ढूंढ निकाला. अफगानिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मोहम्मद हनीफ अतमार ने विदेश मामलों पर प्रधानमंत्री के सलाहकार सरताज अजीज को फोन पर इस बात की खबर दी। हैदर: अतमार ने सरताज अजीज को फोन पर बताया कि अली हैदर गिलानी को गजनी प्रांत में ढूंढ निकाला गया है।

वैचारिक महाकुंभ - संघ प्रमुख ने किया उद्घाटन

इंदौर। सिंहस्थ 2016 में गुरुवार से एक नया अध्याय जुड़ा। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय स्तर का वैचारिक महाकुंभ निनौरा में आयोजित हुआ। इसका उद्घाटन (12 मई) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक मोहन राव भागवत ने किया। 14 मई को समापन समारोह में पीएम नरेंद्र मोदी आये। देश-विदेश के विद्वान इसमें शामिल हुए और दुनिया की समस्याओं पर मंथन किया।

सिंहस्थ में शिप्रा तट पर पूरे भारत के साधु-संत अध्यात्म का अमृत बांटा वहीं दूसरी ओर शहर से करीब 10 किमी दूर निनोरा गांव के पास विभिन्न् देशों के राष्ट्राध्यक्षों व विद्वानों की मौजूदगी में अंतरराष्ट्रीय वैचारिक महाकुंभ 12 मई से 14 मई तक चला। सामाजिक व नैतिक मूल्यों सहित वैश्विक कुटुंब भावना पर भी इसमें मंथन हुआ। इंदौर के संभागायुक्त संजय दुबे, आईजी विपिन माहेश्वरी ने तैयारियों की जिम्मेदारी निभाई थी। इंदौर कलेक्टर पी नरहरि, डीआईजी आरपी सिंह व अन्य अधिकारी मौजूद थे।

डोम में सुंदर चित्र: आयोजन स्थल पर बने डोम में हर तरह की पेंटिंग और मानव जीवन मूल्यों पर आधारित विषयों को लेकर सुंदर चित्र बनाए गये। संभागायुक्त दुबे ने इसके निर्देश अधिकारियों को दिए थे। टीवी स्क्रीन, एयरकंडीशनर प्रदर्शनी, मीडिया सेंटर व मंच निर्माण जल्द पूरा करने को भी कहा गया था।

उज्जैन नगर महामंत्री श्री विवेक जी का जन्मदिन दीनदयाल मंडल ने मनाया। दीनदयाल मंडल के सभी जनप्रतिनिधि उपस्थित थे व त्रिकाल दृष्टि परिवार से उज्जैन संवाददाता मुकेश शर्मा भी शामिल हुए।

शरीर त्यागने के बाद साधु को भिक्षा में देते हैं रोटी का टुकड़ा

उज्जैन। मृत्यु होने के बाद आम व्यक्ति की 12वीं व 13वीं संस्कार क्रिया की जाती है। लेकिन नागा संत-महात्माओं के ब्रह्मलीन होने पर 13वीं नहीं 16वीं की जाती है। पंच दशनाम जूना अखाड़ा गुजरात के महंतश्री शिप्रा गिरि महाराज ने बताया कि नागा संत-महात्मा अपना पिंडदान तो तब ही कर देते हैं जब वह संन्यास धारण करते हैं। इसलिए उनकी 13वीं नहीं की जाती है। ब्रह्मलीन होने पर साथी महात्माओं द्वारा समाधि दी जाती है। समाधि के पूर्व संत को पद्मासन मुद्रा में बैठाकर शुद्धिकरण किया जाता है। उन्हें आशा (लकड़ी) के सहारे इस प्रकार बैठाया जाता है, जैसे वह तपस्या में लीन हो।

कांधे पर टांगते हैं झोला ब्रह्मलीन साधु के कांधे पर एक झोला टांग दिया जाता है। इसके पश्चात् एक रोटी बनाकर उसके कई टुकड़े वहां मौजूद संतों में बांट दिए जाते हैं। सभी संत इन टुकड़ों को ब्रह्मलीन संत के झोले में डाल देते हैं। यह प्रक्रिया ब्रह्मलीन संत की आखिरी भिक्षा मानी जाती है। इस भिक्षा के साथ ही समाधि दी जाती है।

समाधि को देते हैं शिवलिंग का रूप : ब्रह्मलीन संत को समाधि देने के लिए गड्ढा खोद जाता है। इसमें उन्हें पद्मासन मुद्रा में बैठाया जाता है। गड्ढे से निकली मिट्टी का लेप ब्रह्मलीन संत पर इस प्रकार किया जाता है कि जब तक की वह शिवलिंग का आकार नहीं ले ले। इसके पश्चात् गडड़े को मिट्टी से समतलीकरण कर पत्थर के शिवलिंग की स्थापना कर दी जाती है। **धुल लोट प्रक्रिया होती है आवश्यक :** समाधि के पश्चात् महात्माओं की धुल लोट प्रक्रिया होती है, जिसेतीसरा कहा जाता है। धुल लोट में सभी साधुओं को प्रसाद का वितरण किया जाता है। यह विधि खासकर कुंभ के अंतर्गत की जाती है।

संत जो रखते हैं सवा करोड़ का घोड़ा!

उज्जैन। सिंहस्थ के लिए उज्जैन आए अधिकांश संतों के पास लक्झरी कारें हैं। मगर एक संत ऐसे भी हैं, जो कार नहीं घोड़ा साथ रखते हैं। संत का दावा है कि घोड़े की कीमत सवा करोड़ रुपए है। घोड़े को देखने के लिए लोग भी आते हैं। बड़नगर रोड उजरखेड़ा में अलवर के महंत बालकदास के इस घोड़े का नाम चेतन है। बालकदास जी बताते हैं कि 3.5 साल पहले घोड़े का जन्म हुआ था। ज्योतिषाचार्यों ने घोड़े का नाम च से रखने का कहा। इसलिए महंत बालकदास ने घोड़े का नाम चेतन रखा।

मुंबई के कारोबारी ने लगाई कीमत : महंतजी बताते हैं कि वे घोड़ों के शौकीन हैं। चेतन घोड़े को खरीदने के लिए मुंबई के एक घोड़ा व्यवसायी ने सवा करोड रुपए कीमत लगाई थी। लेकिन चेतन आश्रम की शान है। हमारे लिए अनमोल है। ये भी खास : चेतन 66 इंच यानी साढे 5 फीट उंचा है तथा काले रंग का है।, आश्रम मे चेतन के अलावा 13 घोड़े और हैं, जिनके अस्तबल में एसी और कूलर लगे हुए हैं।

अखाड़ा प्रमुख के पद हासिल करने में संतों को वर्षों लग जाते हैं

योग्यता और ज्ञान से बनते हैं महामंडलेश्वर

उज्जैन। सनातन परंपरा में संन्यासी बनना सबसे कठिन कार्य है। शिक्षा, ज्ञान और संस्कार के साथ सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए संन्यासी को महामंडलेश्वर जैसे पद पर बिठाया जाता है। अखाड़ा प्रमुख के पद हासिल करने में संतों को वर्षों लग जाते हैं। शैव एवं वैष्णव संप्रदाय के अखाड़ों में अलग-अलग परंपरा है। शैव मत के अखाड़ों में संन्यास और नागा परंपरा का प्रचलन है।

आदि शंकराचार्य ने किया संगठित : श्री निरंजनी अखाड़े के महंत आशीष गिरि महाराज ने बताया कि कुंभ के आयोजन में सबसे बड़ा आकर्षण दशनामी अखाड़ों का है। आदि गुरु शंकराचार्य ने विभिन्न पंथों में बंटे साधु-समाज को संगठित किया था। अखाड़ों में नागा और साधारण संत की परंपरा है।

थानापति, कोठारी, भंडारी जैसे पद : नागा परंपरा में थानापति, कोतवाल, कोठारी, भंडारी, कारोबारी सहित अनेक पद हैं। नागाओं की योग्यता और उनके स्तर को देखते हुए उन्हें पद सौंपे जाते हैं। साधारण संत को महामंडलेश्वर जैसे पद पर पहुंचने के लिए योग्य होना जरूरी है।

मंडलीश्वर से बने मंडलेश्वर : जानकारी के मुताबिक बहुत पहले साधु-संतों की मंडलियां चलाने वालों को मंडलीश्वर कहा जाता था। 108 और 1008 की उपाधि वाले संत के पास वेदपाठी विद्यार्थी होते थे। अखाड़ों के संतों का कहना है कि ऐसे महापुरुष जिन्हें वेद और गीता का अध्ययन हो, उन्हें बड़े पद के लिए नामित किया जाता था।

पूर्व में शंकराचार्य अखाड़ों में अभिषेक पूजन कराते थे, वैचारिक मतभेद के बाद यह काम महामंडलेश्वर के जिम्मे हो गया। अखाड़ों ने अपने महामंडलेश्वर बनाना शुरू कर दिए।

महामंडलेश्वर पद की शर्तें

1. साधु संन्यास परंपरा से हो।
2.वेद का अध्ययन, चरित्र, व्यवहार व ज्ञान अच्छा हो।
3. अखाड़ा कमेटी निजी जीवन की पड़ताल से संतुष्ट हो।

फिर होता है पट्टाभिषेक

सब कुछ सामान्य होने के बाद संन्यासी का विधिवत पट्टकाभिषेक कर महामंडलेश्वर पद पर अलंकृत किया जाता है। फिर महामंडलेश्वर के बीच आपसी सहमति से आचार्य के पद पर अलंकृत किया जाता है। इसके बाद अखाड़े की सारी गतिविधियां आचार्य महामंडलेश्वर के हाथ संपन्न कराई जाती हैं।

शाही जुलूस में मिलता है मान

महामंडलेश्वर यतींद्रानंद गिरि ने बताया कि अखाड़े में महामंडलेश्वर सम्मान का पद है। शाही जुलूस में नागा संत अखाड़े के देवता को सबसे आगे लेकर चलते हैं। आचार्य महामंडलेश्वर के बाद वरिष्ठता के क्रम पर छत्र चंवर और सुरक्षा के साथ महामंडलेश्वर का रथ चलता है।

ये हैं अन्य पद

श्रीमहंत, महंत, सचिव, मुखिया, जखीरा प्रबंधक

अखाड़ों का पदक्रम

-सबसे बड़े आचार्य महामंडलेश्वर होते हैं। कार्यकाल छह साल।
-मुख्य संरक्षक और उपाध्यक्ष के पद भी।
-वर्तमान में जूनापीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद हैं।
-मुख्य संरक्षक महंत हरि गिरि हैं, वे अखाड़े का संचालन करते हैं।
-पंच तपोनिधि निरंजनी, पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, अटल अखाड़ा, आनंद अखाड़ा, पंच अग्नि अखाड़ा, आनंद अखाड़ा, आवाहन अखाड़ा में आचार्य पीठ की मान्यता है।
-वैष्णव संप्रदाय में श्री महंत मुख्य पद माना जाता है।
-उदासीन अखाड़ों में अलग-अलग परंपरा है। इनमें जखीरा प्रबंधक, श्री महंत के साथ पीठाधीशवर के पद भी हैं।

भोपाल। अत्यंत हर्ष का विषय है की कोलार रोड, वार्ड 82 मे रानी अवान्ति बाई मार्ग से मंदाकिनी मैदान को जोड़ने वाली सड़क (भूमिका रेसिडेंसी से दानिश कुंज चौराहे तक) 2 करोड़ 16 लाख रुपए की लागत से 80 फीट सड़क मार्ग के निर्माण होगा जोकि राजधानी परियोजना विभाग द्वारा किया जायेगा जिसका भूमिपूजन समारोह किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए रामेश्वर शर्मा (विधायक हुजूर विधानसभा क्षेत्र) एवं विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए भूपेन्द्र माली (एमआईसी, सदस्य ननि, भोपाल), श्रीमती मनफूल श्याम सिंह मीना (अध्यक्ष जोन क्र.6), रविन्द्र यति (पार्षद), पवन बौराना (पार्षद), अध्यक्ष सागर प्रीमियम टॉवर एवं रहवासीगणों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

राज्य सरकार के ठोस प्रयासों से सूखा से निपटने में मदद

प्रधानमंत्री श्री मोदी के साथ सूखा प्रभावित राज्यों की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को मध्यप्रदेश में सूखे की स्थिति और उससे निपटने के लिये राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयासों से अवगत करवाया। मुख्यमंत्री ने बताया कि मध्यप्रदेश में 61 लाख सूखा प्रभावित किसानों को 4,664 करोड़ की राहत वितरित की गयी है। यह राहत मध्यप्रदेश के इतिहास की सबसे ज्यादा है। प्रधानमंत्री ने सूखा प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रधानमंत्री को बताया कि बीते 10 वर्ष में राज्य सरकार द्वारा जो ठोस कदम उठाये गये हैं, उसके कारण प्रदेश में सूखा की स्थिति से निपटने में बेहद मदद मिली है। राज्य शासन द्वारा किये गये प्रयासों में जल-भण्डारण संरचनाओं का निर्माण विशेष रूप से शामिल है। उन्होंने कहा कि दो वर्ष से लगातार कम वर्षा होने के बावजूद प्रदेश में फिलहाल 50 हजार गाँव में से सिर्फ 113 गाँव में पानी के परिवहन की आवश्यकता हो रही है। अगर जून के अंत तक भी पानी नहीं गिरता, तब भी सिर्फ 400 गाँव में जल-परिवहन की स्थिति बनेगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सूखा प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक बुलाने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को बताया कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के क्रियान्वयन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन की तैयारी कर ली गयी है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सूक्ष्म सिंचाई, द्रव्य, खाद, स्पेस टेक्नालॉजी के उपयोग तथा खेत-तालाबों पर ध्यान केन्द्रित करने के संबंध में चर्चा की। उन्होंने जल-संरक्षण और भण्डारण तथा एनसीसी, एनएसएस, एनवाईकेएस और स्काउट एण्ड गाइड्स जैसे युवाओं के संगठनों को इन गतिविधियों से जोड़ने की रणनीति पर भी विचार-विमर्श किया। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री श्री चौहान ने नर्मदा नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र में वृक्षारोपण और वृक्षों के संरक्षण पर भी चर्चा की।

बैठक में बताया गया कि मध्यप्रदेश को एनडीआरएफ के अंतर्गत 1875.80 करोड़ की राशि जारी कर दी गयी है। यह एसडीआरएफ के अंतर्गत वर्ष 2015-16 में जारी 657.75 करोड़ की केन्द्रीय सहायता के अतिरिक्त है। वर्ष 2016-17 के लिये एसडीआरएफ के अंतर्गत पहली किस्त के रूप में 345.375 करोड़ की राशि जारी की गयी है।

रैनबसेरा बनाने के लिए अब केंद्र सरकार देगी राशि

भोपल। प्रदेश में बेसहारा और गरीबों के लिए शहर, धार्मिक स्थल और ग्रामीण इलाकों में रैनबसेरा बनाने के लिए केंद्र सरकार आर्थिक मदद देगी। केंद्र सरकार ने नियमों में बदलाव करते हुए नगरीय क्षेत्र में नगरीय विकास और ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत एवं ग्रामीण विकास को नोडल एजेंसी बनाया है। इसके साथ ही रैनबसेरों में अब सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं के लिए पंजीयन भी होगा। प्रदेश में अभी सामाजिक न्याय विभाग के पास जमा होने वाली निराश्रित निधि से रैनबसेरा बनाए जा रहे थे। भागीय अधिकारियों ने बताया कि नगरीय क्षेत्रों में अब नगरीय निकाय प्रोजेक्ट बनाएंगे। नगरीय विकास विभाग इन्हें केंद्र सरकार को भेजकर आर्थिक सहायता प्राप्त करेंगे। ग्रामीण क्षेत्र और धार्मिक महत्व की जगहों पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग इन्हें बनाएगा। भवन निर्माण के लिए पूरी राशि केंद्र सरकार देगी, जबकि बाकी खर्चों के लिए 25 प्रतिशत राशि राज्य सरकार को लगानी होगी। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने नगरीय विकास को पत्र लिखकर रैनबसेरा के लिए जगह चुनने और केंद्र सरकार को प्रोजेक्ट भेजने के लिए कहा है। सूत्रों के मुताबिक विधायकों से भी रैनबसेरा के लिए प्रस्ताव मांगे गए हैं।

पर्यावरण

राजधानी के विशेषज्ञों का भी कहना है कि पौधरोपण के साथ जल संरक्षण के उपायों को बढ़ाना पड़ेगा।

भोपाल की कम होती हरियाली

भोपाल। अनियोजित शहरीकरण के चलते राजधानी भोपाल में पिछले दो दशक में 44 प्रतिशत हरियाली कम हुई है, जिसका सीधा असर पयार्वरण में असंतुलन, गिरते जलस्तर और बढ़ते तापमान के रूप में सामने आ रहा है। हालांकि विकास कार्यों के फेर में लगातार हो रही पेड़ों की कटाई अगले कुछ वर्षों तक रूकने वाली नहीं है।

हरियाली में आई इस बढ़ी गिरावट का खुलासा करने वाली इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु की रिपोर्ट बताती है कि हालात नहीं सुधरे तो 2030 तक हरियाली सिकुड़कर महज 4.10 प्रतिशत से कम रह जाएगी। पिछले दो दशक पहले हरियाली 66 प्रतिशत थी और अब ये 22 प्रतिशत रह गई है।

संस्था ने भोपाल, अहमदाबाद, हैदराबाद और कोलकाता की हरियाली के आंकड़े सेटेलाइट सेंसर से जुटाए हैं। राजधानी के विशेषज्ञों का भी कहना है कि पौधरोपण के साथ जल संरक्षण के उपायों को बढ़ाना पड़ेगा। हरियाली की कई जगह आज सूखे इलाकों ने ले ली है।

तापमान में आठ प्रतिशत का इजाफा : रिसर्च बताती है कि शहर के तापमान में पिछले 12 साल में आठ प्रतिशत का इजाफा हुआ है। इसकी बढ़ी वजह जलस्रोतों पर हुए अतिक्रमण के चलते जलस्रोत में गिरावट और हरियाली में आई कमी है।

हरियाली की कीमत पर शहरीकरण : आईआईएफएम में समाज शास्त्र व सामुदायिक विकास के एसोसिएट प्रोफेसर अमिताभ पांडे का कहना है कि भोपाल में शहरीकरण को बढ़ावा हरियाली की कीमत पर दिया जा रहा है। वनाच्छादित क्षेत्र के कम होने की मुख्य वजह अनियोजित शहरीकरण है। हालात ज्यादा खराब होने से पहले हम खुद को बचा सकते हैं, क्योंकि भोपाल आज भी अन्य शहरों के मुकाबले हरियारली के मामले में बेहतर स्थिति में है, लेकिन जिम्मेदार विभागों, बिल्डर, टाउन प्लानर्स को टारगेट देकर उनके प्रोजेक्ट में हरियाली बढ़ाने को कहा जाए और इसका सख्ती से पालन कराया जाए।

पेड़ों से माइक्रो क्लाइमेट पर पड़ता है असर : पेड़ होने और न होने की जगहों के तापमान में 1-2 डिग्री से. का अंतर होता है। पेड़ घने हों, तो तापमान का अंतर बढ़ भी जाता है। जिन कांक्रीट के घरों पर पेड़ों की छांव रहती है, उनमें तपन कम लगती है। पेड़ पानी भी छोड़ते हैं, जिससे माइक्रो क्लाइमेट में 2-3 डिग्री का फर्क पड़ता है। जहां सड़कों के दोनों ओर पेड़ होते हैं, वहां भी तपन कम होती है।

डेंसिटी कम हुई : ट्री कवर पर काम करने वाले डॉ. सुदेश बाघमारे ने बताया कि राजधानी में सबसे अच्छी 0.5 डेंसिटी 74 बंगला, बिड़ला मंदिर की पहाड़ी पर है। एकांत पार्क, बोरवन पार्क (बैरागढ़) में 0.4 डेंसिटी मिलती है। जबकि बीएचईएल क्षेत्र में सामान्य तौर पर 0.3 और कहीं-कहीं 0.4 डेंसिटी है। नार्थ टीटीनगर और साउथ टीटीनगर के कुछ हिस्से में पेड़ों की कटाई के बाद डेंसिटी 0.2 तक आ गई है, जबकि पुराने शहर में 0.1 डेंसिटी है, जो सबसे खराब स्थिति है।

सम्पादकीय

सिंहस्थ 2016

आस्था के नाम पर 12 सालो में एक बार मिलता है सबको कमाने का अवसर

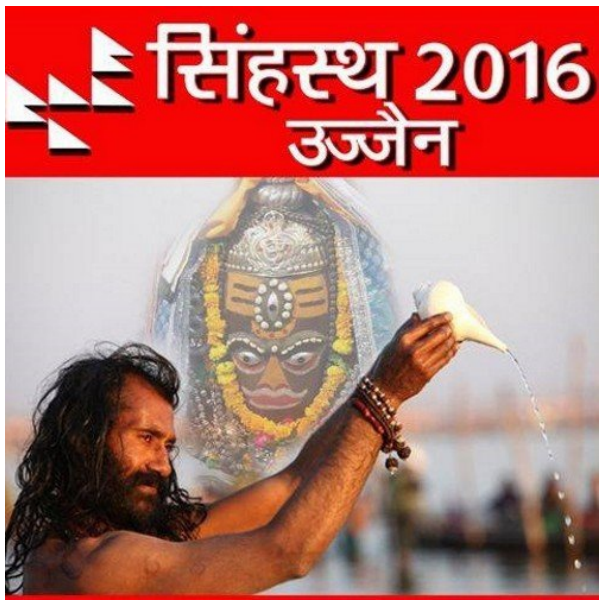

पिछले कुछ महीनो से हर तरफ सिंहस्थ की गूंज थी। प्रदेश के मुख्यमंत्री, कुंभ के प्रभारी मंत्री व सरकारी अमला सभी सिंहस्थ को सफल बनाने मैं लगे हूए थे । केंद्र व राज्य का करोडो रुपए इस महाकुंभ पर खर्च हो चुके है।

हर तरह से प्रचार किया जा रहा था व लोगो को आमंत्रित किया जा रहा था, दूसरी नजर से हम देखे तो उज्जैन की काया पलट 12 सालों में एक ही बार होती है। 12 सालों में एक बार ही उज्जैन वासियों को ऐसा महसूस होता हैं की उनके शहर में विकास हो रहा है। उज्जैन के व्यापारी भी इस अवसर का भरपूर लाभ लेते है, व जितना हो सके वो कुंभ के दौरान कमा लेना चाहते है।

अभी कुछ दिनों पहले मेरा सिंहस्थ में उज्जैन जाना हुआ। जब मैंने बाजार का व मेला क्षेत्र का जायजा लिया तो पाया हर तरफ लूट मची हुई है। होटल मे कमरा लेना साधारण आदमी के बस की बात ही नहीं थी, जो कमरा पहले रु-1500/- रु-2500/- का मिलता था वही सिंहस्थ के कारण रु- 8000 से रु-9000 का मिल रहा था। खाने पीने का सामान भी सामान्य से आधिक कीमत पर बेचा जा रहा था। हमारा मध्य प्रदेश सरकार का उपक्रम एमपी टूरिजम भी ए.सी टेंट वाले कमरे रु- 5000 से लेकर रु-8000 में दे रहा था। क्या इन सब अवसरों पर कोई प्राइस कंट्रोल बॉडी नहीं काम करती ?

कुंभ को ले कर जितना गंभीर हमारे मुख्यमंत्री व प्रभारी मंत्री है, क्या उतने गंभीर अधिकारी भी है ? क्यों मौसम विभाग की चेतावनी को ले कर उज्जैन प्रशासन गंभीर नहीं था ? क्यों कई बार संतो व साधुओं ने व्यवस्थाओं को ले कर विरोध जताया ? क्यों हर कुंभ मे हजारो करोड़ खर्च होने के बाद भी समुचित व्यवस्था नहीं हो पाती ? क्यों अक्सर कुंभ के बाद कई घोटाले उजागर होते है ? 'अभी कुछ दिनों पहले खबर आई थी 91 किलोमीटर की सड़क मे 96 करोड़ का घोटाला' एक ही सड़क के निकले चार बार टेंडर (पंचक्रोशी)। आगे और कितने इस तरह के घोटाले उजागर होंगे कह नहीं सकते। पर यह सारी घटनाओं का असर देश व विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं पर निश्चित ही पड़ता होगा।

कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को तो पुण्य मिलता ही है, पर साथ ही 12 सालों में आने वाला यह कुम्भ प्रशासन के कई अधिकारियों के वारे न्यारे कर देता हैं।

ये सब देख कर ऐसा लगा जैसे हर कोई आस्था के नाम पर पैसा कमाना चाहता है। क्या ऐसे बड़े मौकों पर लूट खसोट यू ही होती रहेगी ? क्या प्रशासन कभी इस और ध्यान देगा ? क्या कभी राज्य व केंद्र सरकार इसे रोकने का कोई कानून बना पायेगी ?

- पराग वराडपांडे

जन-जन के विकास का दशक

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में बीते दस वर्ष में हुआ विकास जन-अपेक्षाओं के अनुरूप है। प्रदेश में ऐसा विकास हुआ जिसका लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचा। गरीब, कमजोर, किसान, मजदूर, महिला, बजुर्ग, युवा हरेक ने विकास के इस अहसास को महसूस किया। जन विकास के इस अनूठे प्रयास ने मध्यप्रदेश को विकास की नयी ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

मध्यप्रदेश विकास दर के मामले में देश में अव्वल बना। प्रदेश की ऐतिहासिक कृषि विकास दर ने लोगों को चमत्कृत कर दिया। मध्यप्रदेश ने ऐसी कई कल्याणकारी योजनाओं को शुरू किया, जिनकी उपयोगिता को देश-विदेश में सराहा गया। प्रदेश में नीतियों और योजनाओं का निर्माण जनता के बीच और उनकी जरूरतों के अनुरूप करने का अद्वितीय प्रयोग भी किया गया। मध्यप्रदेश की कई नवाचारी योजनाएं जिन्हें राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है, जनता के विभिन्न वर्गों से सम्वाद के लये आयोजित की गयी पंचायतों की देन है। आम जनता की तकलीफों को जानने-समझने की विशिष्टता से प्रदेश में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना बनी है जिसमें गरीब की बेटी के विवाह की चिंता की गयी है। लाड़ली लक्ष्मी जैसी क्रांतिकारी योजना शुरू की गयी है, जो बेटी को बोझ नहीं वरदान बनाती है। आगे जाकर इसमें केवल बेटियों के माता-पिता को पेंशन देने की व्यवस्था भी की गयी है।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना ऐसी योजना है जो गरीब वृद्धजनों को तीर्थ यात्रा का अवसर देती है। गरीबी के चलते जो बुजुर्ग तीर्थ यात्रा की आस मन में लिये संसार से चले जाते हैं प्रदेश की सरकार उनके लिये सभी धर्मों के तीर्थों पर आस्था की रेल भेज रही है। जिससे वह तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी करते हैं। गरीब मजदूरों के लिये मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना बनायी गयी जिनमें मजदूरों के परिवारों के लिये प्रसव सहायता, चिकित्सा सहायता, शिक्षा सहायता जैसी व्यवस्थाएं की गयी है। यह योजना श्रमिक कल्याण के क्षेत्र में मील का पत्थर है। ऐसी कई योजनाएं हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री चौहान खुद किसान पृष्ठभूमि से है इसलिये वे खेती-किसानी की जरूरतों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। इसी के चलते वे किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर कृषि ऋण दिलाने जैसी योजना की जरूरत समझकर लागू करते हैं। अब वे इससे आगे जाकर ऋणात्मक दस प्रतिशत पर कृषि ऋण देने की बात कर रहे हैं। इन्हीं कोशिशों से प्रदेश की कृषि विकास दर 24.9 प्रतिशत तक पहुंचती है और प्रदेश को तीन बार राष्ट्रीय कृषि कर्मण अवार्ड मिलता है। जिसे वे सहजता से किसानों की उपलब्धि बताते हैं। खेती में सिंचाई का महत्व समझते है हुये प्रदेश में लगातार सिंचाई का क्षेत्र बढ़ाने का प्रयास किया गया है। वर्षों से अधूरी सिंचाई योजनाएं पूरी की गयी किसानों के लिये नहर के अंतिम छोर तक पानी पहुंचाया गया। सिंचाई की क्षमता दस सालों में साढ़े 7 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 36 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गयी है। मालवा को रेगिस्तान बनने से बचाने के लिये नर्मदा-क्षिप्रा लिंक महत्वाकांक्षी नदी जोड़ो योजना पूरी की गयी हैं, जिसमें नर्मदा का पानी क्षिप्रा में डाला गया है। इस योजना से हजारों गॉवों में सिंचाई के साथ पेयजल की व्यवस्था भी होगी।

आम लोगों को सरकारी दफ्तरों से अपने रोजमर्रा के कामों में आने वाली देरी को समझते हुये ही प्रदेश में मध्यप्रदेश में लोक सेवा गारंटी प्रदाय अधिनियम जैसा क्रांतिकारी कानून लागू किया। जो सेवा की समय सीमा में मिलने की गारंटी की बात करता है तथा देरी होने पर संबंधित सरकारी कर्मचारी पर जुर्माने की व्यवस्था करता है। इस अनूठे कानून से देश के अनेक राज्यों ने अपने यहां लागू किया है। इस अधिनिमय के लिये मध्यप्रदेश को संयुक्त राष्ट्र संघ का लोक सेवा अवार्ड हासिल हुआ है।

(Wanted Dealer for Bhopal - Product Apna GPS System)
SAAP SOLUTION
Explore New Digital World
All Types of Website Designing
Business Promotion, Lease Website
Industrial Product Promotion through industrialproduct.in
Get 2GB corporate mail account @ Rs 1500/- Per Annum per mail account with advance sharing feature
Logo Designing by Experts
Bulk SMS Services
For more details visit our website saapsolution.com
For enquires contact on 9425313619,
Email: info@saapsolution.com

सिंहस्थ में त्रिकाल दृष्टि समाचार को पढ़ते हुए किन्नर व संत एवं झलकियाँ

अगर आपको भी नहीं आती है चैन की नींद तो..

दिनभर की थकान के बाद अगर रात को भी आप चैन की नींद नहीं सो पाते हैं तो ये आने वाले खतरे का संकेत हो सकता है। क्या आपके साथ भी ऐसा होता है कि बीच रात में ही आपकी नींद किसी अनजान डर से खुल जाती है? कई लोगों के साथ ऐसा भी होता है कि वे सपने में बेचैन हो जाते हैं और पसीने-पसीने होकर उठ बैठते हैं।

अस्त-व्यस्त जिंदगी, ऑफिस का तनाव, असुरक्षा की भावना और रिश्तों में कड़वाहट आपको कभी भी चैन की नींद नहीं सोने देते। पर ये अनिद्रा नहीं है। अनिद्रा में इंसान को नींद आती ही नहीं है जबकि इस समस्या में नींद तो आती है लेकिन बीच में ही खुल जाती है। कई बार इंसान को सोते-सोते इतनी घबराहट महसूस होती है कि उसकी आंखें खुल जाती हैं।

कारण: बीच-बीच में नींद खुल जाने के कई कारण हो सकते हैं। कई बार तनाव इतना होता है कि इंसान चिंता के कारण चैन की नींद नहीं ले पाता। कई बार बचपन का कोई बुरा और डरावना हादसा भी सोने नहीं देता। इसके अलावा अगर आप असुरक्षा की भावना से पीड़ित हैं तो भी आपको चैन की नींद कम ही आती होगी।

क्या हैं उपाय :

1. अगर आपकी नींद भी बीच रात में खुल जाती है तो उससे परेशान होने के बदले ये सोचना शुरू कर दें कि ऐसा क्यों हो रहा है।

क्या हो सकती हैं परेशानियां :

1. व्यवहार में चिड़चिड़ापन और आक्रामकता
2. पाचन क्रिया पर बुरा असर पड़ना और कब्ज की समस्या।
3. मधुमेह होने का खतरा और दिल से जुड़ी बीमारियां होने की आशंका
4. मोटापे की समस्या
5. काम पर प्रतिकूल प्रभाव

2. सोने से पहले कोई किताब पढ़ें, ऐसा करने से दिमाग शांत होता है और चैन की नींद आती है।
3. म्यूजिक सुनते हुए सोना भी एक बेहतर उपाय है।
4. अपने कमरे में अच्छी खुशबू बिखेरें। ऐसा करने से मूड अच्छा होता है और नींद अच्छी आती है।
5. सोन से पहले हल्के और हवादार कपड़े पहनें। सोने से पहले हाथ, पैर और मुंह अच्छी तरह से साफ कर लें ताकि दिनभर की थकान दूर हो जाए.आप चाहें तो योग का भी सहारा ले सकते हैं।

गर्भावस्था में तिल खाना है फायदेमंद

गर्भावस्था, हर औरत की जिंदगी का एक बेहद खास समय होता है। इस वक्त वो जो कुछ भी खाती है, सोचती है या करती है उसका सीधा असर बच्चे पर पड़ता है. ऐसे में मां को पूरी सतर्कता बरतने की सलाह दी जाती है।

तिल एक ऐसी ही सेहतमंद चीज है, जिसे गर्भावस्था में लेना बहुत फायदेमंद होता है। आमतौर पर लोगों को ये लगता है कि तिल के सेवन से गर्भपात क खतरा बढ़ जाता है पर इस बात का कोई आधार नहीं है।

तिल को अलग-अलग रूपों में लेना बहुत फायदेमंद होता है। ये पोषक तत्वों, कैल्शियम, अमीनो एसिड, प्रोटीन, विटामिन और आयरन से भरपूर होता है। गर्भावस्था में कब्ज हो जाना एक आम समस्या और तिल उसका बेजोड़ इलाज है।

कैल्शियम से भरपूर तिल गर्भावस्था में खासतौर पर फायदेमंद है। ये वो समय होता है जब गर्भवती महिला को कैल्शियम की सबसे ज्यादा जरूरत होती है. तिल के सेवन से दांत मजबूत बनते हैं और हड्डियां भी कमजोर नहीं होने पाती हैं।

हालांकि विशेषज्ञ ये जरूर कहते हैं कि तिल की मात्रा संतुलित होनी चाहिए लेकिन इस दौरान तिल के फायदों को नजरअंदाज कर देना गलत है।

1. तिल कई प्रकार के पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। ये वही सारे तत्व होते हैं जिन्हें गर्भावस्था में लेना आवश्यक है।

2. गर्भावस्था में कब्ज हो जाना एक आम समस्या है। तिल के सेवन से गर्भावस्था में होने वाली ये समस्या दूर हो जाती है।

3. तिल रोग प्रतिरोधक क्षमता को बूस्ट करने में मददगार होता है। इसके अलावा नियमित और संतुलित मात्रा में तिल के सेवन से सर्दी-जुकाम होने का खतरा भी नहीं रह जाता।

चावल का पानी पीने के ये फायदे आपको हैरत में डाल देंगे

आज के समय में ज्यादातर घरों में चावल पकाने के लिए प्रेशर कूकर या फिर इलेक्ट्रिक कूकर का इस्तेमाल किया जाता है पर पहले के समय में लोग खुले और गहरे बर्तनों में चावल पकाया करते थे। हालांकि कुछ ग्रामीण इलाकों में आज भी लोग इसी तरह चावल पकाते हैं। इस तरह से चावल पकाने का सबसे बड़ा फायदा ये है कि इससे चावल के पानी को कई तरह से इस्तेमाल में लाया जा सकता है। चावल के पानी को कई जगहों पर माड़ के नाम से भी जाना जाता है। चावल का पानी बहुत फायदेमंद होता है। चावल में मौजूद सारे पोषक तत्व इसमें घुले होते हैं और इसके सेवन से वो सारे पोषक तत्व आपको तरल रूप में मिल जाते हैं। विशेषज्ञों की मानें तो सप्ताह में एकबार चावल का पानी पीना अच्छी सेहत का उपाय है। चावल का पानी सेहत के साथ ही दिनभर के कामों को सक्रियता से करने के लिए ऊर्जा देने का भी काम करता है।

अंडे के छिलके में छिपा है खूबसूरत त्वचा का राज

अंडे का इस्तेमाल न केवल सेहत बनाने के लिए किया जाता है बल्कि ये रूप निखारने के भी काम आता है। अंडा का सफेद हिस्सा हो या फिर उसकी जर्दी, दोनों ही सेहत और सुंदरता के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है। पर क्या आपने कभी अंडे के छिलके से रूप निखारने की बात सुनी है? कम ही लोगों को पता होगा कि अंडे के छिलके का इस्तेमाल त्वचा से जुड़ी कई समस्याओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है।

विशेषज्ञों की मानें तो अंडे के छिलके से त्वचा से जुड़ी कई तरह की परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके साथ ही अंडे के छिलके के सही इस्तेमाल से त्वचा साफ होती है और नेचुरल ग्लो आता है।

अब सवाल ये उठता है कि अंडे के छिलकों का इस्तेमाल किया किस तरह जाए? अंडे के छिलके का इस्तेमाल करने से पहले उसे अच्छी तरह सुखा लेना बहुत जरूरी है। अंडे को फोड़ने के बाद छिलके को धूप में सुखा लें। उसके बाद इसे पीसकर पाउडर बना लें। आप चाहें तो इस पाउडर में कई दूसरे पोषक तत्व भी मिला सकती हैं और उसके बाद इस्तेमाल में ला सकती हैं।

अंडे के छिलके को इस्तेमाल में लाने के कई तरीके हो सकते हैं. जैसे, अगर आपको साफ-सुथरी और दाग-धब्बों से रहित त्वचा चाहिए तो अंडे के छिलके के पाउडर में सिरका मिलाकर पेस्ट बना लीजिए. इस पेस्ट से चेहरे पर हल्के हाथों से मसाज कीजिए। इस उपाय से कुछ ही दिनों में आपको गोरी-निखरी त्वचा नजर आने लगेगी।

किस तरह करें इस्तेमाल?

1. अंडे के छिलके से बने पाउडर में नींबू का रस या फिर सिरका मिलाकर लगाने से त्वचा पर मौजूद दाग-धब्बे तो साफ हो ही जाते हैं साथ ही संक्रमण का खतरा भी कम हो जाता है। अगर आपको किसी तरह का स्किन इंफेक्शन है तो भी ये उपाय बहुत फायदेमंद रहेगा।
2. अंडे के छिलके में दो चम्मच शहद मिलाकर लगाएं। इस उपाय से जहां चेहरे पर चमक आएगी वहीं उसकी नमी भी बनी रहेगी। पाउडर और शहद को मिलाकर एक गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें और उसे प्रभावित जगह पर लगाएं। एक सप्ताह के भीतर आपकी त्वचा में फर्क नजर आने लगेगा।
3. अंडे के छिलके से बने पाउडर में थोड़ी सी मात्रा में चीनी पाउडर मिला लें। इसमें अंडे के सफेद हिस्से को डालकर अच्छी तरह फेंट लें। इस मास्क को सप्ताह में एकबार लगाए. कुछ बार के इस्तेमाल से ही आपको फर्क नजर आने लगेगा।
4. आप ब्रश तो हर रोज करते होंगे लेकिन क्या उसके बावजूद आपके दांत पीले हैं? अगर आपके दांत पीले हैं तो इस पाउडर से दांतों पर नियमित मसाज करें. इससे दांत नेचुरल तरीके से सफेद हो जाएंगे.।
5. आप चाहें तो इस पाउडर में एलोवेरा जेल मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते हैं। इसके इस्तेमाल से त्वचा की आवश्यक नमी बनी रहती है और चेहरे पर निखार आता है।

शाक्ति साधना का सबसे बड़ा केंद्र है कामाख्या मंदिर

कामाख्या शक्तिपीठ गुवाहाटी (असम) के पश्चिम में 8 कि.मी. दूर नीलांचल पर्वत पर स्थित है. माता के सभी शक्तिपीठों में से कामाख्या शक्तिपीठ को सर्वोत्तम कहा जाता है. माता सती के प्रति भगवान शिव का मोह भंग करने के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के मृत शरीर के 51 भाग किए थे। जिस-जिस जगह पर माता सती के शरीर के अंग गिरे, वे शक्तिपीठ कहलाए। कहा जाता है कि यहां पर माता सती का गुह्य मतलब योनि भाग गिरा था, उसी से कामाख्या महापीठ की उत्पत्ति हुई. कहा जाता है यहां देवी का योनि भाग होने की वजह से यहां माता रजस्वला होती हैं।

कामाख्या शक्तिपीठ चमत्कारों और रोचक तथ्यों से भरा हुआ है. यहां जानिए कामाख्या शक्तिपीठ से जुड़े ऐसे ही 6 रोचक तथ्य।

1. मंदिर में नहीं है देवी की मूर्ति : इस मंदिर में देवी की कोई मूर्ति नहीं है, यहां पर देवी के योनि भाग की ही पूजा की जाती है. मंदिर में एक कुंड सा है, जो हमेशा फूलों से ढका रहता है. इस जगह के पास में ही एक मंदिर है जहां पर देवी की मूर्ति स्थापित है. यह पीठ माता के सभी पीठों में से महापीठ माना जाता है।

2. यहां माता हर साल होती हैं रजस्वला: इस पीठ के बारे में एक बहुत ही रोचक कथा प्रसिद्ध है. कहा जाता है कि इस जगह पर मां का योनि भाग गिरा था, जिस वजह से यहां पर माता हर साल तीन दिनों के लिए रजस्वला होती हैं. इस दौरान मंदिर को बंद कर दिया जाता है. तीन दिनों के बाद मंदिर को बहुत ही उत्साह के साथ खोला जाता है।

3. प्रसाद के रूप में मिलता है गीला वस्त्र: यहां पर भक्तों को प्रसाद के रूप में एक गीला कपड़ा दिया जाता है, जिसे अम्बुवाची वस्त्र कहते हैं. कहा जाता है कि देवी के रजस्वला होने के दौरान प्रतिमा के आस-पास सफेद कपड़ा बिछा दिया जाता है. तीन दिन बाद जब मंदिर के दरवाजे खोले जाते हैं, तब वह वस्त्र माता के रज से लाल रंग से भीगा होता है. बाद में इसी वस्त्र को भक्तों में प्रसाद के रूप में बांटा जाता है।

4. लुप्त हो चुका है मूल मंदिर: कथा के अनुसार, एक समय पर नरक नाम का एक असुर था। नरक ने कामाख्या देवी के सामने विवाह करने का प्रस्ताव रखा. देवी उससे विवाह नहीं करना चाहती थी, इसलिए उन्होंने नरक के सामने एक शर्त रखी। शर्त यह थी कि अगर नरक एक रात में ही इस जगह पर मार्ग, घाट, मंदिर आदि सब बनवा दे, तो देवी उससे विवाह कर लेंगी। नरक ने शर्त पूरी करने के लिए भगवान विश्वकर्मा को बुलाया और काम शुरू कर दिया।

काम पूरा होता देख देवी ने रात खत्म होने से पहले ही मुर्गे के द्वारा सुबह होने की सूचना दिलवा दी और विवाह नहीं हो पाया। आज भी पर्वत के नीचे से ऊपर जाने वाले मार्ग को नरकासुर मार्ग के नाम से जाना जाता है और जिस मंदिर में माता की मूर्ति स्थापित है, उसे कामादेव मंदिर कहा जाता है। मंदिर के संबंध में कहा जाता है कि नरकासुर के अत्याचारों से कामाख्या के दर्शन में कई परेशानियां उत्पन्न होने लगी थीं, जिस बात से क्रोधित होकर महर्षि वशिष्ट ने इस जगह को श्राप दे दिया।

कहा जाता है कि श्राप के कारण समय के साथ कामाख्या पीठ लुप्त हो गया।

5. 16वीं शताब्दी से जुड़ा है मंदिर का इतिहास: मान्यताओं के अनुसार, कहा जाता है कि 16वीं शताब्दी में काममरूप प्रदेश के राज्यों में युद्ध होने लगे, जिसमें कूचविहार रियासत के राजा विश्वसिंह जीत गए। युद्ध में विश्व सिंह के भाई खो गए थे और अपने भाई को ढूंढने के लिए वे घूमत-घूमते नीलांचल पर्वत पर पहुंच गए।

वहां उन्हें एक वृद्ध महिला दिखाई दी। उस महिला ने राजा को इस जगह के महत्व और यहां कामाख्या पीठ होने के बारे में बताया। यह बात जानकर राजा ने इस जगह की खुदाई शुरु करवाई। खुदाई करने पर कामदेव का बनवाए हुए मूल मंदिर का निचला हिस्सा बाहर निकला। राजा ने उसी मंदिर के ऊपर नया मंदिर बनवाया।

कहा जाता है कि 1564 में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मंदिर को तोड़ दिया था। जिसे अगले साल राजा विश्वसिंह के पुत्र नरनारायण ने फिर से बनवाया।

6. भैरव के दर्शन के बिना अधूरी है कामाख्या यात्रा: कामाख्या मंदिर से कुछ दूरी पर उमानंद भैरव का मंदिर है, उमानंद भैरव ही इस शक्तिपीठ के भैरव हैं। यह मंदिर ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में है। कहा जाता है कि इनके दर्शन के बिना कामाख्या देवी की यात्रा अधूरी मानी जाती है। कामाख्या मंदिर की यात्रा को पूरा करने के लिए और अपनी सारी मनोकामनाएं पूरी करने के लिए कामाख्या देवी के बाद उमानंद भैरव के दर्शन करना अनिर्वाय है।

7. तंत्र विद्या का सबसे बड़ा मंदिर: कामाख्या मंदिर तंत्र विद्या का सबसे बढ़ा केंद्र माना जाता है और हर साल जून महीने में यहां पर अंबुवासी मेला लगता है. देश के हर कोने से साधु-संत और तांत्रिक यहां पर इकट्ठे होते हैं और तंत्र साधना करते हैं। माना जाता है कि इस दौरान मां के रजस्वला होने का पर्व मनाया जाता है और इस समय ब्रह्मपुत्र नदी का पानी तीन दिन के लिए लाल हो जाता है।

गौतम बुद्ध के कुछ प्रमुख सूत्र

गौतम बुद्ध प्रज्ञा पुरुष थे। उन्होंने धर्म को पारंपरिक स्वरूप से मुक्त कराकर उसे ज्ञान की तलाश से जोड़ा। उन्होंने विवेक को धर्म के मूल में रखा और तमाम रुढ़ियों को खारिज किया। उन्होंने ज्ञान को सर्वोच्च महत्व दिया और उनके इन विचारों की प्रासंगिकता आज भी है। पुष्प की सुगंध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती लेकिन मानव के सदगुण की महक सब ओर फैलती है। तीन चीजों को लम्बी अवधि तक छुपाया नहीं जा सकता, सूर्य, चन्द्रमा और सत्य। हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखें, अन्यथा हम अपने मन को सक्षम और शुद्ध नहीं रख पाएंगे। हम आपने विचारों से ही अच्छी तरह ढलते हैं, हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं। जब मन पवित्र होता है तो खुशी परछाई की तरह हमेशा हमारे साथ चलती है। हजारों दीपों को एक ही दिए से, बिना उसके प्रकाश को कम किए जलाया जा सकता है। खुशी बांटने से कभी कम नहीं होती। अप्रिय शब्द पशुओं को भी नहीं सुहाते हैं।

अराजकता सभी जटिल बातों में निहित है। परिश्रम के साथ प्रयास करते रहो। आप को जो भी मिला है उसका अधिक मूल्यांकन न करें और न ही दूसरों से ईर्ष्या करें। वे लोग जो दूसरों से ईर्ष्या करते हैं, उन्हें मन को शांति कभी प्राप्त नहीं होती। अतीत पर ध्यान केंद्रित मत करो, भविष्य का सपना भी मत देखो, वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करो। आप चाहे कितने भी पवित्र शब्दों को पढ़ लें या बोल लें, लेकिन जब तक उन पर अमल नहीं करते उसका कोई फायदा नहीं है।इच्छा ही सब दुःखों का मूल है। जिस तरह उबलते हुए पानी में हम अपना, प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते उसी तरह क्रोध की अवस्था में यह नहीं समझ पाते कि हमारी भलाई किस बात में है। चतुराई से जीने वाले लोगों को मौत से भी डरने की जरुरत नहीं है। वह व्यक्ति जो 50 लोगों को प्यार करता है, 50 दुखों से घिरा होता है, जो किसी से भी प्यार नहीं करता है उसे कोई संकट नहीं है।

कैप्टन कूल को जोरदार झटका, गांगुली का विराट को समर्थन

नई दिल्ली। आईपीएल के नौवे सत्र में पुणे सुपरजाइंट्स के फ्लॉप शो के बाद भारतीय खिलाड़ी और कप्तान एमएस धोनी के नेतृत्व पर सवाल उठने शुरू हो गए हैं। पहले भी उनकी कप्तानी को लेकर कई खेल विशेषज्ञ सवाल उठा चुके हैं। लेकिन कभी धोनी का बचाव करने वाले टीम इंडिया के पूर्व दिग्गज खिलाड़ी सौरव गांगुली भी अब इस फेहरिस्त में शामिल हो गए हैं।

कप्तानी छोड़ें धोनी : आईपीएल के नौवे सत्र में धोनी के नेतृत्व में पुणे सुपरजाइंट्स की ओर से किए गए फिसड्डी प्रदर्शन के बाद पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने कहा कि विश्व की हर टीम भविष्य को लेकर तैयारी करती है। टीम इंडिया के चयनकर्ताओं से यह सवाल आगामी तीन-चार साल को देखते हुए है। क्या वह सोचते हैं कि धोनी में तब तक कप्तानी लायक क्षमता रहेगी? हालाकि उन्होंने कहा कि धोनी के संन्यास लेने का सवाल ही नहीं उठता, लेकिन उन्हें 2019 तक कप्तान क्यों बनाए रखा जाए, यह मुझे समझ में नहीं आता है? उन्होंने यह भी कहा कि अगर धोनी को 2019 तक कप्तान बनाए रखा जाता है तो यह काफी हैरानी वाली बात होगी।

विराट कोहली बने कप्तान : पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने कहा कि पिछले नौ सालों में धोनी ने कप्तानी की जिम्मेदारी को बहुत बखूबी तरीके से अंजाम दिया है। लेकिन विराट कोहली दिन प्रतिदिन बेहतर होते जा रहे हैं। लगातार प्रदर्शन के मामले में भी वो दुनिया भर के खिलाड़ियों में बेहतर हैं। मैदान पर उनका रवैया जबर्दस्त होता है। उनका टेस्ट कप्तानी का रिकॉर्ड भी अच्छा है। अब चयनकर्ताओं को देखना है कि क्या वो धोनी को 2019 तक कप्तान के रूप में उचित मानते हैं या नहीं। यदि वह भी नहीं मानते तो उन्हें नए कप्तान की ओर जाना चाहिए।

जंगल बुक

जॉन फेवरू की रूडयार्ड किपलिंग की किताब पर आधारित फिल्म द जंगल बुक की कहानी एक इंसान के बच्चे 'मोगली' (नील सेठी) की है, जो जंगल में अपने जिंदगी के लिए संघर्ष करता नजर आता है। कुछ जानवर उसके साथ हैं तो कुछ उसके खिलाफ नजर आते हैं। इस पूरे एडवेंचर ट्रिप को करीब 1 घंटे और 46 मिनट में दिखाया गया है। आपको बता दें कि इस फिल्म के हिंदी वर्जन में इरफान खान, नाना पाटेकर, प्रियंका चोपड़ा और ओम पुरी जैसे कई दिग्गज कलाकारों ने अपनी आवाज दी है।

'द जंगल बुक' भारत में आठ अप्रैल को चार भाषाओं हिंदी, अंग्रेजी, तमिल और तेलुगु में रिलीज हुई। रिलीज होने के तीन दिनों के भीतर ही यानि अपने पहले सप्ताहांत में यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर 40 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई कर ले गई। यह भारत में एक हफ्ते में सबसे ज्यादा कमाने वाली पहली हॉलीवुड फिल्म का रिकॉर्ड भी हासिल कर चुकी है।

'जंगल बुक' 2016 में अब तक की सबसे बड़ी हिट साबित हुई है। किसी भी भारतीय फिल्म ने इस साल इतनी कमाई नहीं की है और यह ब्लॉकबस्टर फिल्म अब तक 133 करोड़ रुपए कमा कर 'एयरलिफ्ट' से भी आगे निकल चुकी है। यह फिल्म अभी भी कमाल का बिजनेस कर रही है और बॉक्स ऑफिस पर शाहरुख खान की फिल्म 'फैन' को भी टिकने नहीं दे रही है।

यह फिल्म एक ऐसी दुनिया में ले जाती हे जहाँ
से बाहर आने का मन नहीं होता और किसी भी उम्र का शख्श इससे कनेक्ट हुए बिना नहीं रह सकता। उलझन भरी जिंदगी में बच्चों की मासूम दुनिया ही सच्ची हे जिसमे छल कपट की कोई गुंजाइश नहीं है और ऐसी दुनिया की खोज सबको है। फिल्म की तकनीक अदभुत है जिसका लगभग प्रत्येक फ्रेम स्पैशल इफेक्ट की एक मिसाल है। अपने मासूम मन को खोजने के लिए इसे जरूर देखें। हालांकि ये फिल्म किसी भी स्टार रेटिंग से परे हे फिर भी मै इसे 5 में से 4 स्टार देता हूँ।

★★★★ *अजय सिसोदिया*

आयुष समाधान
आयुर्वेद व होमियोपैथी
डॉक्टरों द्वारा घर बैठे पायें उचित परामर्श व दवाईयां
बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं
जल ही जीवन है जल बचायें
पेड़ पौधे करो न नष्ट सांस लेने में होगा कष्ट
www.ayushsamadhaan.com
FOR MORE DETAILS & BENIFITS VISIT OUR WEBSITE FOR REGISTRATION

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : पराग वराडपांडे द्वारा दिशागोचर पब्लिकेशन 26 बी, प्रेस काम्पलेक्स एम.पी. नगर, जोन-1 से मुद्रित कराकर, प्लाट नं. -12, सेक्टर-ए, परस्पर सोसायटी चूनाभट्टी, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित। सम्पादक: पराग वराडपांडे, मो. 9826051505,आर.एन.आई. नं. MPHIN/2015/66655, editor@trikaldrishti.com (विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।)